Dus Mahavidya Kavacham

|| दस महाविद्या कवचम् ||

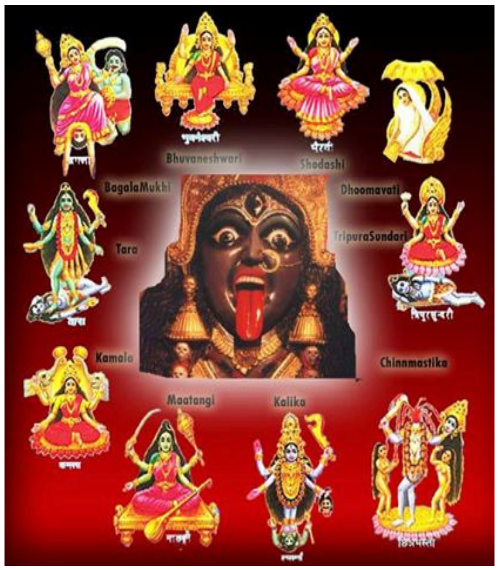

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

देवकवच के माध्यम से अपने स्थान एवं सम्पूर्ण शरीर की सुरक्षा हेतु देवता से प्रार्थना की जाती है। किसी भी देवता की उपासना के आदि एवं अन्त में कवच का पाठ करने से की गई पूजा का हरण नहीं होता तथा देवता द्वारा साधक का स्थान तथा शरीर रक्षित होता है। अतः नित्य पूजन में कवच का पाठ करना तंत्रशास्त्रों में उल्लेखित है।

दसमहाविद्या कवच का एक परीक्षित प्रयोग आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। समस्त महाविद्याएं एक ही आदिशक्ति के भव्य स्वरूप हैं। अतः साधक दस महाविद्याओं में से जो भी अपना इष्ट हो अथवा दुर्गा जी के समक्ष दस महाविद्या के कवच का पाठ करके अपने दुःखों पर विजय प्राप्त कर सकता है। सर्वप्रथम साधक गुरु गणेश का पूजन करके अपने इष्ट का पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् अपने इष्ट देवता में समस्त महाविद्याओं सहित सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भावित कर दस महाविद्याओं का सूक्ष्म पूजन करें। जैसे- ओं महाकाल्यै नमः पुष्पं समर्पयामि...। इसी प्रकार अपने

इष्ट देव के समक्ष दस महाविद्याओं का पूजनादि करके पुष्पादि अर्पित करते जाये। इस प्रकार पूजनादि करके श्रद्धापूर्वक दसमहाविद्या कवच का पाठ आरम्भ करें।

अन्त में शिवजी या भैरवजी के कवच का पाठ अवश्य करें। इस विधि से दस महाविद्याओं की कृपा दृष्टि साधक पर बनी रहेगी। मनुष्य आर्थिक बाधा, प्रेतबाधा, बुरीनजर, शत्रुबाधा या अन्य विपत्ति में इस प्रयोग से सुरक्षित रहता है। निरन्तर इसका पाठ करने से निवास स्थल में सुखसमृद्धि का स्थायी वास होता है एवं दुःख क्लेशादि समाप्त होते हैं। त्रिकाल संध्या या प्रातः काल एवं रात्रिकाल में कवचमय साधना करें।

त्रैलोक्य विजय काली कवचम्– श्रीसदाशिव उवाच– त्रैलौक्य विजयस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः। छन्दोऽनुष्टुप् देवता च आद्याकाली प्रकीर्तिता।।

माया बीजं बीजमिति रमा शक्तिरुदाहृता। क्रीं कीलकं काम्य सिद्धौ विनियोगः प्रकीर्तितः।।

ह्रीमाद्या मे शिरः पातु श्रीं काली वदनं मम। हृदयं क्रीं परा शक्तिः पयात्कण्ठं परात्परा।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

नेत्रे पातु जगद्धात्री कर्णौं रक्षतु शंकरी। घ्राणं पातु महामाया रसनां सर्वमंगला।।

दन्तान्रक्षतु कौमारी कपोलौ कमलालया। ओष्ठाधरौ क्षमा रक्षेच्चिबुकं चारुहासिनी।।

ग्रीवां पायात्कुलेशानी ककुत्पातु कृपामयी। द्वौ बाहू बाहुदा रक्षेत्करौ कैवल्यदायिनी।।

स्कन्धौ कपर्द्दिनी पातु पृष्ठं त्रैलोक्यतारिणी। पार्श्वे पायादपर्णा मे कटिं मे कमठासना।।

नाभौ पातु विशालाक्षी प्रजास्थानं प्रभावतीं। उरू रक्षतु कल्याणी पादौ मे पार्वती सदा।।

जय दुर्गाऽवतु प्राणान्सर्वांग सर्वसिद्धिदा। रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन च।। तत्सर्वं मे सदा रक्षेदाद्याकाली सनातनी।

फलश्रुति- इति ते कथितं दिव्यं त्रैलोक्य विजयाभिधम्। कवचं कालिकादेव्या आद्यायाः परमाद्भुतम्।।

पूजाकाले पठेद्यस्तु आद्याधिकृत मानसः। सर्वान्कामानवाप्नोति तस्याद्याशु प्रसीदति।।

मंत्रसिद्धिर्भवेदाशु किंकराः क्षुद्र सिद्धयः। अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी प्राप्नुयाद्धनम्।।

विद्यार्थी लभते विद्यां कामी कामनवाप्नुयात्। सहस्रावृत पाठेन वर्म्मणेऽस्य पुरस्क्रिया।।

पुरश्चरणसम्पन्नं यथोक्तफलदं भवेत्। चन्दनागुरुकस्तूरी कुंकुमै रक्त चन्दनैः।।

भूर्जेविलख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि। शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा साधकः कटौ।।

तस्याद्या कालिका वश्या वाञ्छितार्थ प्रयच्छति। न कुत्रापि भयं तस्य सर्वत्र विजयी कविः।।

अरोगी चिरंजीवी स्याद् बलवान्धारणक्षमः। सर्वविद्यासु निपुणः सर्वशास्त्रार्थ तत्ववित्।।

वशे तस्य महीपाला भोग मोक्षौ करस्थितौ। कलिकल्मष युक्तान्तं निःश्रयेसकरं परम्।।

श्रीतारा कवचम्– इस तारा कवच में भगवती तारा के कई मंत्रों का वर्णन है, साधक उन मंत्रों का स्वतन्त्र प्रयोग कर सकते हैं।

ईश्वर उवाच- कोटितन्त्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी। दिव्यं हि कवचं तस्याः श्रृणुष्व सर्वकामदम्।।

विनियोग- ॐ अस्य श्री ताराकवचस्य अक्षोभ्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, भगवती तारा देवता, सर्वमंत्रसिद्धि समृद्धये जपे विनियोगः।

स्तोत्र- प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी। ललाटे पातु ह्रींकारो बीजरूपा महेश्वरी।।
स्त्रींकारो वदने नित्यं लज्जारूपा महेश्वरी। हूँकारः पातु हृदये भवानीरूपशक्तिधृक्।।
फट्कारः पातु सर्वांगे सर्वसिद्धिफलप्रदा। खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा।।
निम्नोदरी सदा स्कंधयुग्मे पातु महेश्वरी। व्याघ्रचर्मावृता कट्यां पातु देवी शिवप्रिया।।
पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी। रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु।।
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी। करालास्या सदा पातु लिंगेदेवी हरप्रिया।।
पिंगोग्रैकजटा पातु जंघायां विघ्नाशिनी। प्रेतखर्परभृद्देवी जानुवक्रे महेश्वरी।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम। नागकुण्डलधर्त्री च पातु पादयुगेः ततः।।
नागहार धरादेवी सर्वांगं पातु सर्वदा। नागकंकधरा देवी पातु प्रान्तरदेशतः।।
चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी। खड्गहस्ता महादेवी श्रवणे पातु सर्वदा।।
नीलाम्बरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी। कर्त्रिहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः।।
ब्रह्मरूपधरा देवी संग्रामे पातु सर्वदा। नागकंकणधर्त्री च भोजने पातु सर्वदा।।
शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा। वीरासनध्रा देवी निद्रायां पातु सर्वदा।।

ध्नुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसंकुले। नागाञ्चितकटी पातु देवी मां सर्वकर्मसु।।
छिन्नमुण्डधरा देवी कानने पातु सर्वदा। चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा।।
द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु। अलंकारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा।।

रक्ष रक्ष नदीकुञ्जे हूं हूं फट् सुसमन्विते। बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

मणिभृद्वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा। रक्ष रक्ष सदा हूं हूं ह्रीं स्वाहा महेश्वरी।।

पुष्पकेतुरजार्हेति कानने पातु सर्वदा। ॐ ह्रीं वज्रपुष्पं हुं फट् प्रान्तरे सर्वकामदा।।

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी। हूं स्वाहा शक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा।।

आं हूं स्वाहा महेशानी पातु द्यूते हरप्रिया। ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोत्सारिणी देवी विघ्नान्मां सदाऽवतु।।

ॐ पवित्रवज्रभूमे हुं फट् स्वाहा समन्विता। पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्नविनाशिनी।।

ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हुं फट् स्वाहा समन्विता। पाताले पातु सा देवी लाकिनी नामसंज्ञिका।।

ह्रींकारी पातु मां पूर्वे शक्तिरूपा महेश्वरी। स्त्रींकारी पातु देवेशी वधूरूपा महेश्वरी।।

हूंस्वरूपा महादेवी पातु मां क्रोधरूपिणी। फट्स्वरूपा महामाया उत्तरे पातु सर्वदा।।

पश्चिमे पातु मां देवी फट्स्वरूपा हरप्रिया। मध्ये मां पातु देवेशी हूंस्वरूपा नगात्मजा।।

नीलवर्णा सदा पातु सर्वतो वाग्भवा सदा। भवानी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी।।

विद्यादानरता देवी वक्त्रो नीलसरस्वती। शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ।।
भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी। भूतप्रेतालये घोरे दुर्गमा श्रीघनाऽवतु।।
पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका। कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि।।
शक्नोमि गदितुं देवी भवेत्तस्य फलं च यत्। पुत्रदारेषु बन्धूनां सर्वदेशे च सर्वदा।।
न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः। शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वापि कवचं सर्वकामदम्।।
प्रपठन् वा स्मरन्मर्त्यो दुःखशोक विवर्जितः। सर्वशास्त्रे महेशानि कविराड् भवति ध्रुवम्।।
सर्ववागीश्वरो मर्त्योलोकवश्यो धनेश्वरः। रणे द्यूते विवादे च जयस्तत्र भवेद्ध्रुवम्।।
पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम्। शत्रवो दासतां यान्ति सर्वेषां वल्लभः सदा।।
गर्वी खर्वी भवत्येव वादी स्खलति दर्शनात्। मृत्युश्च वश्यतां याति दासास्तस्यावनीभुजः।।
प्रसंगात्कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम्। प्रपठन्वा स्मरन्मर्त्यः शापानुग्रहणे क्षमः।।

आनन्दवृन्द सिन्धूनामधिपः कविराड् भवेत्। सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यः सदा सुखी।।
गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम्। तत्रापि कवचं देवि दुर्ल्लभं भुवनत्रये।।
गुरुर्देवो हरः साक्षात्तत्पत्नी तु हरप्रिया। अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः।।
मंत्राचारा महेशानि कथिताः पूर्ववत्प्रिये। नाभौ ज्योतिस्तथा रक्तं हृदयोपरि चिन्तयेत्।।
ऐश्वर्यं सुकवित्वं च महावागीश्वरो नृपः। नित्यं तस्य महेशानि महिलासंगमं चरेत्।।
पंचाचाररतो मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा। शक्तियुक्तो भवेन्मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवासुरमानुषाः। तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते।।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सिद्धिदायकाः। प्रशंसन्ति सदा देवी तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्।।
विघ्नात्मकाश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले। प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्।।
फलश्रुति- इति ते कथितं देवि मया सम्यक्प्रकीर्तितम्। भुक्तिमुक्तिकरं साक्षात्कल्प वृक्षस्वरूपकम्।।

आसाद्याद्यगुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालम्बनं। मोहेनापि मदेन चापि रहितो जाड्येन वा युज्यते।।
सिद्धोऽसौ भुवि सर्वदुःखविपदां पारं प्रयात्यन्तके। मित्रांतस्यनृपाश्च देवि विपदोनश्यन्ति तस्याशु च।।
तद्गांत्र प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि। तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम्।।
इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो भजते नरः। अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः।।
लिखित्वा धरयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते।।
गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा। यावकैर्वा महेशानि लिखेन्मन्त्रं समाहितः।।
अष्टम्यां मंगलदिने चतुर्द्दश्यामथापि वा। संध्यायां देवेदेवेशि लिखेद्यन्त्रं समाहितः।।
मघायां श्रवणे वापि रेवत्यां वा विशेषतः। सिंहराशौगते चन्द्रे कर्कटस्थे दिवाकरे।।
मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे। लिखित्वा धरयेद्यस्तु उत्तराभिमुखो भवेत्।।
शमशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे विशेषतः। निशायां वा लिखेन्मंत्रं तस्य सिद्धिरचञ्चला।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गुरुणा च महेश्वरि। ध्यान धारण योगेन धारयेद्यस्तु भक्तितः।। अचिरात्तस्य सिद्धि स्यान्नात्र कार्या विचारणा।

श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्री बालात्रिपुरसुन्दरी कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे। श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। सौः शक्तये नमो नाभौ। क्लीं बीजाय नमः पादयोः। चतुर्वर्ग साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

ऐं, क्लीं, सौः, ऐं, क्लीं, सौः से षंडगन्यास करे-

ध्यानम्- मुक्ताशेखर कुण्डलांगद मणिग्रैवेयहारोर्मिका, विद्योतद् वलयादि कंकणकटिसूत्रां स्फुरन् नूपुराम्। माणिक्योदर बन्धकम्बु कबरीमिन्दोः कलां विभ्रतीं, पाशं च अंकुश पुस्तकाक्ष वलयं दक्षोर्ध्व बाह्वादितः।।

स्तोत्र- ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं क्लीं कामस्तु तथा हृदि। सौः शक्ति बीजं च पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः।।

ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये। हसकलह्रीं सौः पातु भैरवी कण्ठदेशतः।।

सुन्दरी नाभि देशेऽव्याच्छीर्षिका सकला सदा। भ्रू नासयोरन्तराले महात्रिपुरसुन्दरी।।

ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः। भगा देवी तु हृदये उदरे भगसर्पिणी।।

भगमाला नाभिदेशे लिंगे पातु मनोभवा। गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा।।

चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका। नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभंकरी।।

ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा। पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी।।

आग्नेयां पातु कौमारी महालक्ष्मीश्च नैर्ऋते। वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु चेशके।।

जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमंगला। आकाशे पातु वरदा सर्वतो भुवनेश्वरी।9।

फलश्रुति- इदं तु कवचं नाम देवनामपि दुर्लभम्। पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचि प्रयत मानसः।।

नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद् भवेत्। न च मारीभयं तस्य पातकानां भयं तथा।।

न दारिद्रयवशं गच्छेत् तिष्ठन्मृत्यु वशे न च। गच्छेच्छिवपुरे देवि! सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे। स माप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र घातनम्।।

त्रैलोक्य मंगल श्रीभुवनेश्वरी कवचम्- श्रीदेव्युवाच- भुवनेश्याश्च देवेश! या या विद्याः प्रकाशिताः। श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि सांप्रतं।।

त्रैलोक्य मंगलं नाम कवचं यत् पुरोदितम्। कथयस्व महोदव! मम प्रीतिकरं परम्।।

ईश्वर उवाच- शृणु पार्वति! वक्ष्यामि सावधानाऽवधारय। त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं मंत्र विग्रहम्।।

सिद्धविद्यामयं देवि! सर्वेश्वर्य प्रदायकम्। पठनाद् धारणान्मर्त्य स्त्रैलोक्यैश्वर्यवान् भवेत्।।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्यमंगलस्यास्य कवचस्य ऋषिशिवः, छन्दो विराट् जगद्धात्री देवता भुवनेश्वरी, धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।

स्तोत्र- ह्रीं बींज मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम्। ऐं पातु दक्ष नेत्रं मे ह्रीं पातु वाम लोचनम्।।

श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी। वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा।।

ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम। वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु पराम्बिका।।

श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा। क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्य दायिनी।।

ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदाऽवतु। क्रों पातु नाभिदेशं सा

त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी।।

सर्वबीजप्रभा पृष्ठं पातु सर्ववशंकरी। ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम्।।

माहेश्वरी सदा पातु सक्थिनी जानुयुग्मकम्। अन्नपूर्णा सदापातु स्वाहा पातु पदद्वयम्।।

सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णाऽखिलं वपुः तारं। माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परं।।

शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा। तारं दुर्गे युगं रक्षिणी स्वाहेति दशाक्षरी।।

जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां पूर्वतो मुदा। माया बीजादिका चैषा दशार्णा च परा तथा।।10।

उत्तप्त कांचनाभासा जय दुर्गाऽनलेऽवतु। तारं ह्रीं दुं दुर्गायै नमोऽष्टवर्णात्मिका परा।।

शंखचक्र धनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु। महिष मर्दिनी स्वाहा वसु वर्णात्मिका परा।।

नैऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुर नाशिनी। माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता।।

पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु। पाशांकुश पुटा मायेति परमेश्वरि स्वाहा।।

त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारुढाऽनिलेऽवतु। सरस्वती पंचस्वरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे।।

स्वाहा च त्र्यक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु। तारं माया तु कवचं खे रक्षेत् सततं वधूः।।

हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाऽखिलप्रदा। त्वरिताष्टादिभिः पायाच्छिव कोणे सदा च मां।।

ऐं क्लीं सौः सततं बाला मामूर्ध्व देशतोऽवतु। विन्द्वन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु।।

फलश्रुति- इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्य मंगलं परं। सारात् सारतरं पुण्यं महाविद्यौघ विग्रहम्।।

अस्य हि पठनात् सद्य कुबेरोऽपि धनेश्वरः। इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद् धारणाद्यतः।।

सर्वसिद्धिश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः। पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत्।।

संवत्सर कृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्। प्रीतिमान् योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे।।

वाणी च निवसेद् वक्त्रे सत्यं न संशयः। यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्य मंगलाभिधम्।।

कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः। सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।

पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा। बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्याऽपि लभते सुतम्।।

ब्रह्मास्त्रादिनी शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्। एतत् कवचमज्ञात्वा यो जपेद् भुवनेश्वरीम्।। दारिद्रयं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।

त्रैलोक्य विजय श्रीभैरवी कवचम्- श्री देव्युवाच- भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया। सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम्।।

त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्र विनिवारणम्। त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति।।

ईश्वर उवाच- श्रृणु पार्वति वक्ष्यामि सुन्दरी प्राणवल्लभे। त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम्।।

पठित्वा धरयित्वेदं त्रैलोक्यविजयी भवेत्। जघान सकलान्दैत्यान् यद्धृत्वा मधूसूदनः।।

ब्रह्मासृष्टिं वितनुते यद्धृत्वाभीष्ट्दायकम्। धनाधिपः कुबेरोऽपि वासवस्त्रिदशेश्वरः।।

यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी विभुः। न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन।।

पुत्रोभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्चेन्मृत्युमाप्नुयात्। ऋषिस्तु कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरेव च।।
विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी। धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।।
अधरो बिन्दुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः। भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गोबीजत्रयात्मकः।।
बालैषा मे शिरः पातु बिन्दुनादयुतापि सा। भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका।।
दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु। कामबीजं सदा पातु घ्राण्युग्मं परावतु।।
सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा। हस्रैं कंठं हसकलरीं स्कंधौ पातु हस्रौ भुजौ।।
पंचमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु। हृदयं हसकलीं वक्षः पातु हसौः स्तनौ नमः।।
पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम। हस्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हसकलरीं सदा।।
कुक्षिं पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा। ऐंईओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु।।
हस्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हसकलह्रीं सदा। पातु हसौं करौ पातु षट्कूटा भैरवी मम।।

सहस्रैं सक्थिनी पातु सहसकलरीं सदावतु। गुह्यदेशं हस्रौं पातु जानुनी भैरवी मम।।
संपत्प्रदा सदा पातु हैं जंघे हसक्लीं पदौ। पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु।।
हसैं मामवतु प्राच्यां हरक्लीं पावकेऽवतु। हसौंः मे दक्षिणे पातु भैरवी चक्रसंस्थिता।।
ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु निर्ऋत्यां चक्रभैरवी। क्रीं क्रीं क्रीं पातु वायव्ये हूं हूं पातु सदोत्तरे।।
ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु। ऊर्द्ध्वं प्रागुक्तबीजानि रक्षन्तु मामधः स्थले।।
दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधरिणी। ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सा तारा सर्वत्र मां सदावतु।।
संग्रामे कानने दुर्गे तोये तरंगदुस्तरे। खड्गकर्त्रिधरा सोग्रा सदा मां परिरक्षतु।।
फलश्रुति- इति ते कथितं देवि सारात्सारतंर महत्। त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात्। स्पर्द्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः।।
यः शत्रुभीतो रणकातरो व भीतो वने वा सलिलालये वा। वादे सभायां प्रतिवादिनो वा रक्षःप्रकोपाद् ग्रहसकुलाद्वा।।

प्रचंडदंडाक्षमनाच्च भीतो गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्रसाध्यात्। अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्त्रिासंध्यं स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च।।
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम्। विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धरदेद्यदि।।
कंठे वा दक्षिणे बाहौ त्रौलोक्यविजयी भवेत्। तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवंति कुसमानि च।।
लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भवने मुखे। एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीं पराम्।। बालां वा प्रजपेद्विद्वान्दरिद्रो मृत्युमाप्नुयात्।

त्रैलोक्यवियज छिन्नमस्ता कवचम्- देव्युवाच- कथिताश्छिन्नमस्ताया या या विद्याः सुगोपिताः। त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चाधिगता मया।।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्। त्रैलोक्यविजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो।।
भैरव उवाच- श्रृणु वक्ष्यामि देवेशि! सर्वदेवनमस्कृते। त्रैलोक्यविजयं नामकवचं सर्वमोहनम्।।
सर्वविद्यामयं साक्षात्सुरासुर जयप्रदम्। धरणात्पठनादीश स्त्रैलोक्यविजयी विभुः।।
ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धरणात्पठनाद्यातः। कर्ता पाता च संहर्ता भुवनानां सुरेश्वरि।।

न देयं परशिष्येभ्योऽभक्तेभ्योऽपि विशेषतः। देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योऽप्यधिकाय च।।

देव्याश्च च्छिन्नमस्तायाः कवचस्य च भैरवः। ऋषिस्तु स्याद्विराट् छंदो देवता छिन्नमस्तका।

त्रैलोक्यविजये मुक्तौ विनियोगः प्रक्रीर्तितः। हुंकारो मे शिरः पातु छिन्नमस्ता बलप्रदा।।

ह्रां ह्रूं ऐं त्र्यक्षरी पातु भालं वक्त्रं दिंगबरा। श्रीं ह्री ह्रूं ऐं दृशो पातु मुण्डं कर्त्रिंधरापि सा।।

सा विद्या प्रणवाद्यंता श्रुतियुग्मं सदाऽवतु। वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा च ध्रुवादिका।।

घ्राणं पातु च्छिन्नमस्ता मुण्डकर्त्रिविधरिणी। श्रीमायाकूर्चवाग्बीजै र्वज्रवैरोचनीय हूं।।

हूं फट् स्वाहा महाविद्या पोडषी ब्रह्मरूपिणी। स्वपार्श्वे वर्णिनी चासृग्धरां पाययती मुदा।।

वदनं सर्वदा पातु च्छिन्नमस्ता स्वशक्तिका। मुण्डकर्त्रिधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी।।

वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु। रामाद्या पातु जिह्वां च लज्जाद्या पातु कंठकम्।।

कूर्चाद्या हृदयं पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम्। रमया पुटिता विद्या पार्श्वौ पातु सुरेश्वरी।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगंबरा। कूर्चेण पुटिता देवी पृश्देशे सदाऽवतु।।
वाग्बीजपुटिता चैषा मध्यं पातु सशक्तिका। ईश्वरी कूर्चवाग्बीजै र्वज्रवैरोचनीय हूं।।
हूं फट् स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्य्यसमप्रभा। छिन्नमस्ता सदा पायादुरुयुग्मं सशक्तिका।।
ह्री ह्रूं वर्णिनी जानुं श्रीं ह्रीं च डाकिनी पदम्। सर्वविद्यास्थिता नित्या सर्वांगं मे सदाऽवतु।।
प्राच्यां पायादेकलिंगा योगिनी पावकेऽवतु। डाकिनी दक्षिणे पातु श्रीमहाभैरवी च माम्।।
नैर्ऋत्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेऽवतु। इन्द्राक्षी पातु वायव्येऽसितांगी पातु चोत्तरे।।
संहारिणी सदापातु शिवकोणे सकर्त्रिका। इत्यष्टशक्तयः पांतु दिग्विदिक्षु सकर्त्रिकाः।।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वं ह्रीं ह्रीं मां पातु पावके। ह्रूं ह्रूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु।।
क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैर्ऋत्यां ह्रीं ह्रीं च पश्चिमेऽवतु। हूं हूं पातु मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे।।
महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु। तारो माया वधूः कूर्चं फट्कारोऽयं महामनुः।।

खड्गकर्त्रिधरा तारा चौर्ध्वदेशं सदाऽवतु। ह्रीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले मां पातु चैकजटा सती।। तारा तु सहिता खेऽव्यान्महानीलसरस्वती।

फलश्रुति- इति ते कथितं देव्याः कवचं मन्त्रविगहम्। यद्धृत्वा पठपनाद्भीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः।।

सुरासुर मुनीन्द्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम्। यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम्।।

भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याद्याश्च खेचराः। आज्ञां गृह्णंति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः।।

एतदेव परं ब्रह्मकवचं मुन्मुखोदितम्। देवीमभ्यर्च्य गंधद्यैर्मूले नैव पठेत्सकृत्।।

संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्। भूर्जे विलिखितं चैतद्गुटिकां कांचनस्थिताम्।।

धरयेद्दक्षिणे बाहौ कंठे वा यदि वान्यतः। सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत्।।

तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणी च वदनांबुजे। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रे यांति सौम्यताम्।।

इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम्। सोऽपि शस्त्रप्रहारेण मृत्युमाप्नोति सत्वरम्।।

श्रीधूमावती कवचम्- श्रीपार्वत्युवाच- धूमावत्यर्चनं शंभो श्रुतं विस्तरतो माया। कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे।।

श्रीभैरव उवाच- श्रृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे। कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम्।।
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः। योगिनो भवंति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः।।
विनियोग- ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषिः। अनुष्टुप्छंद। श्रीधूमावती देवता। धूं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। धूमावती कीलकम्। शत्रुहनने पाठे विनियोगः।
स्तोत्र- ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु। धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौसदाऽवतु।।
दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा। शूर्प्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी।।
मुखं में पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम्। सर्वविद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम्।।
चंचला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु। धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा।।
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा। क्षुप्तिपासार्दिता देवी भयद कलहप्रिया।।
सर्वांगं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी। इति ते कथिंत पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम्।9।
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे। पठनीयं महादेवि त्रिसंध्यं ध्यानतत्परः। दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत्।।

श्रीबगलामुखी कवचम्– श्रीभैरवी उवाच– श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर। इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो।।

वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम्। शुभदं स्मरणात् पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशनम्।।

श्रीभैरव उवाच– कवचं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे। पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।।

विनियोग– ॐ अस्य श्रीबगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ल बीजं, ईं शक्तिं, ऐं कीलकम्, पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः।

स्तोत्र– शिरो में बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा। ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी।।

गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी। वैरिजिह्वउ धरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी।।

उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात् परा। परात् परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी।।

हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे। विवादे विषमे घोरे संग्रामेरिपुसंकटे।।

पीताम्बरधरा पातु सर्वांगं शिवनर्तकी। श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा।।

पातु पुत्रं सुतां चैव कलत्रं कालिका मम। पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा।।

रन्ध्रे हि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम्। न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।

पठनाद् धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छित लभेत्। इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।।

पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः। वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा।। महाभये विपत्तौ च पठेद् वा पाठ्येत् तु यः। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति।।

त्रैलोक्य मंगल श्रीमातंगी कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्रीमातंगी कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः। विराट् छन्दः! श्रीमातंगी देवता चतुर्वर्ग सिद्धये पाठे विनियोगः।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

ऋष्यादिन्यास- श्रीदक्षिणा मूर्ति ऋषिये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमातंगी देवतायै नमः हृदि। चतुवर्ग सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

स्तोत्र- ॐ शिरो मातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी। तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम।।

पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा। त्रिपुष्पा पार्श्वयोः पातु गुदे कामेश्वरी मम।।

ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघयोश्च हरप्रिया। महामाया पादयुग्मे सर्वांगेषु कुलेश्वरी।।

अंगं प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी। ब्रह्मरन्ध्रे सदा रक्षेन् मातंगी नाम संस्थिता।।

रक्षेन्नित्यं ललाटे सा महापिशाचिनीति च। नेत्रयोः सुमुखी रक्षेत् देवी रक्षतु नासिकाम्।।

महापिशाचिनी पयान्मुखे रक्षतु सर्वदा। लज्जा रक्षतु मां दन्ताञ्चौष्ठौ सम्मार्जनी करा।।

चिबुके कण्ठदेशे च ठकार त्रितयं पुनः। सविसर्ग महादेवि! हृदयं पातु सर्वदा।।

नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकाऽवतु लोचने। उदरे पातु चामुण्डा लिंगे कात्यायनी तथा।।

उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतुचाम्बिका। भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चण्डभूषणा।।

जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका। विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे।।
नैर्ऋत्ये सुदया रक्षेद् वायव्यां पातु लक्ष्मणा। ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी मातंगी शुभकारिणी।।
रक्षेत् सुरेशी चाग्नेय्यां बगला पातु चोत्तरे। ऊर्ध्वं पातु महादेवी! देवानां हितकारिणी।।
पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी। प्रणवं च तमो माया कामबीजं च कूर्चकम्।।
मातंगिनी ङेयुतास्त्रं वह्निजायाऽवधिर्मनुः। सार्द्धैकादश वर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा।।
फलश्रुति- इति ते कथिंत देवि! गुह्याद् गुह्यतरं परम्। त्रैलोक्य मंगलं नाम कवचं देव दुर्लभम्।।
य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते सम्पदालयम्। परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि। ऐश्वर्यं सु कवित्वं च वाक् सिद्धिं लभते ध्रुवम्।।
नित्यं तस्य तु मातंगी महिला मंगलं चरेत्। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुर सत्तमाः।।
ब्रह्मराक्षस वेताला ग्रहाद्या भूतजातयः। तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवंति ते।।

कवचं धरयेद्यस्तु सर्वसिद्धि लभेद ध्रुवम। राजानोऽपि च दासाःस्युः षट्कर्माणि च साधयेत्।।
सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहु भाषितैः। इदं कवचमज्ञात्वा मातंगीं यो भजेन्नरः।।
अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशय। गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः।। तस्मै मातंगनी देवी सर्वसिद्धि प्रयच्छति।।

श्रीलक्ष्मी कवचम्- विनियोग- ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीलक्ष्मीदेवता समस्त ऐश्वर्य सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः।

ध्यानम्- ज्वलत् कोटि बालार्क भासारुणांगीं सुलावण्य श्रृंगार शोभाभिरामाम्। महापद्म किंजल्क मध्ये विराजत् त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्री भवानीम्।।

स्तोत्र- मस्तकं पातु मे पद्मा कण्ठं पातु हरिप्रिया। नासिकां पातु मे लक्ष्मीः कमला पातु लोचनम्।।

केशान् केशवकान्ता च कपालं कमलालया। जगत्प्रसूर्गण्डयुग्मं स्कन्धं सम्पत्प्रदा सदा।।

ॐ श्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु। ॐ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा वक्षः सदाऽवतु। पातु श्रीर्मम कंकालं बाहुयुग्मं च ते नमः।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः पादौ पातु मे संततं चिरम्। ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मायै स्वाहा पातु नितम्बकम्।।

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा सर्वांगं पातु मे सदा। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मां पातु सर्वतः।।

फलश्रुति- इति ते कथितं वत्स सर्वसम्पत्करं परम्। सर्वैश्वर्यप्रदं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।

गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं धारयेतु यः। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ स सर्वविजयी भवेत्।।

महालक्ष्मीर्गृहं तस्य न जहाति कदाचन्। तस्य छायेव सततं सा च जन्मनि जन्मनि।।

इदं कवचमज्ञात्वा भजेल्लक्ष्मीं सुमन्दधीः। शतलक्ष प्रजप्तोऽपि न मंत्रः सिद्धिदायकः।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana